RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-01
January -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

रामचरित्रमानस में वीर-रस

डॉ॰ दिव्या प्रियदर्शिनी

'रामचरितमानस' में कुम्भकर्ण रावण-पक्ष का सर्वाधिक विशालकाय, सर्वाधिक बलशाली, अत्यधिक आहार और निद्रा का आकांक्षी, निष्कपट एवं कृतज्ञ चरित्र है। शारीरिक बल में अद्वितीय होते हुए भी वह संघर्ष-प्रिय नहीं है। हाँ, रावण का अनुज, उसका अनुगामी और उसकी इच्छापूर्ति का औजार वह अवश्य बन गया है। पूर्वजन्म में प्रतापभानु के अनुज अरिमर्दन के रूप में उसके चरित्र की सारी विशेषताएँ विद्यमान हैं।

सीता-हरण के कारण लंका में जो महान् युद्ध छिड़ा हुआ था, उसमें रावण की सेना प्रतिदिन पराजित और विनष्ट हो रही थी। ऐसी स्थिति में रावण को कुम्भकर्ण की याद आयी। उसे लगा कि सम्भवतः कुम्भकर्ण ही उसे इस विपत्ति से उबार सकता है। साथ ही उसने यह भी सोचा कि आज तक वह कुम्भकर्ण का जो बोझ ढोता रहा है, उसका प्रतिदान पाने का अवसर भी उपस्थित हो गया है।

रावण कुम्भकर्ण के पास गया। बड़ी कठिनाई से कुम्भकर्ण की निद्रा टूटी और वह उठकर बैठ गया। रावण की मुखाकृति देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया। सर्वदा उत्साह और शौर्य से उत्फुल्ल रावण उसे म्लानमुख दिखाई दे रहा था। कुम्भकर्ण की जिज्ञासा के उत्तर में रावण ने उन सारी घटनाओं का वर्णन किया, जिनसे प्रेरित होकर उसने मैथिली के अपहरण का निर्णय लिया। घटना के सारे वर्णन में उसका अभिमान स्पष्ट था। उसने कुम्भकर्ण पर यह छाप डालने की चेष्टा की उसके इस कार्य में कोई अनौचित्य नहीं है।

हिन्दी-राम-काव्य परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास महर्षि वाल्मीकि के बाद राम के सम्बन्ध में साधिकार लिखने वाले एकमात्र कवि हैं। नाभादास ने उन्हें "वाल्मीकि का अवतार' घोषित भी किया है । गोस्वामी जी का काव्य अनेक नूतन उद्भावनाओं से पूर्ण है। वाल्मीकि ने जिस नर-श्रेष्ठ राम की कथा का गायन किया था , उसे गोस्वामी तुलसीदास ने नारायण की कथा के रूप में परिवर्तित कर दिया, किन्तु ऐसा परिवर्त्तन भी उन्होंने इस विशेषता के साथ किया कि अपनी अपनी दृष्टि के अनुसार द्रष्टा उसे नर के रूप में भी देख सके और नारायण के रूप में भी --

"जिन्हके रही भावना जैसी। प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ।।
देखहिं रूप महा रनधीरा । मनहुँ वीररस धरें सरीरा ।।
रहे असुर छल छोनिप बेषा। तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा ||
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई। नर भूषण लोचना सुखदाई ||
विदुषन्ह प्रभु विराटमय दीसा। बहु मुख कर पग लोचन सीसा ||"

कहा जा सकता है कि वाल्मीकि ने नर को नारायणत्व तक पहुँचाने का प्रयास किया, तो गोस्वामी तुलसीदास ने नारायण को नर बना दिया, परब्रह्म का मानवीकरण (ह्यूमनाइजेशन ऑफ द ऐब्सोल्यूट) किया।

आधुनिक कहलाने के लिए जो लोग ईश्वर को नकारना आवश्यक मानते हैं, उन्हें भी यह समझना होगा कि कोई भी व्यक्ति पूरा-पूरा निरीश्वरवादी नहीं होता है। ईश्वर तो वस्तुतः हृदय और मस्तिष्क को बल देनेवाली आस्था है, जिस आस्था के बिना आदमी रह ही नहीं सकता।

तुलसी की आस्था के आदर्श हैं राम। आज के साम्यवादियों की आस्था के आधार हैं - मार्क्स या माओत्सेतुंग, भोजपुरी फिल्मों के लोकप्रिय गायक और अभिनेता मनोज तिवारी की आस्था के आधार हैं -- मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर और टीम इंडिया के कप्तान महेन्द्र सिंह धौनी, जिनका एक विशाल मंदिर तीन करोड़ की लागत से श्री तिवारी अपने पैतृक कैमूर जिले के अतरवलिया में बनवाने जा रहे हैं ।

भौतिक प्राचुर्य से युक्त आधुनिक उद्धत बौद्धिकता परम्परागत मूल्यों के खण्डन में सफल होने का जैसा दावा करती है, वैसा दावा हृदय को अवलम्ब दे-पानेवाले किसी विश्वास या आस्था के निर्माण के लिए क्यों नहीं कर पाती है ? लोकतंत्र का मुखौटा लगाकर सामन्तवादी आचरण करनेवाली पूँजीवादी व्यवस्था हो अथवा समाजवादी रामनामी चादर ओढ़कर खेत खानेवाली वर्गवादी दलीय तानाशाही, दोनों ही खेमों में झूठ, फरेब, दमन और प्रलोभन पर आधारित हृदयहीन शासनतंत्र क्यों पनप रहा है और सत्य, न्याय और विचार की बाणी का गला क्यों घोंटा जा रहा है ? विज्ञान की सहायता से इन्द्रियों को सुख देनेवाली एवं अहं का तृप्त करनेवाले पदार्थों के द्वारा अपने को संतुष्ट करने की अंधाघुंध आसुरी चेष्टा करनेवाला आज का स्नायविक तनावग्रस्त मानव दूसरों से कटता और अकेला पड़ता चला जा रहा है। सम्भव है, तुलसी की शैली, शब्दावली और विचार-पद्धति संस्कृति की चकाचौंध से चौंधियायी .दृष्टिवाले बहुत-से फैशनपरस्त आधुनिक भारतीयों को अनाकर्षक लगे, संग्रह-त्याग की प्रक्रिया को तो सफल और उत्कृष्ट जीवन जीने के लिए अपनाना ही पड़ेगा। ऐसे लोगों से स्वयं तुलसी ने यह प्रश्न किया है कि यदि मणि के पात्र में शराब हो और मिट्टी के पात्र में अमृत, तो क्या अमृत को त्याग कर पात्र की चमक-दमक से प्रलुब्ध होकर शराब को प्रापत करना उचित है ?

जहाँ राम के रूप और गुण से उसका मन क्षण भर के लिए डूबा, वहाँ सुरा-घट में उसके सारे सदविचार इतने अधिक डूब गए कि उन्मत्त होकर वह गर्जना करने लगा --

"राम रूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक | रावन मागेउ कोटि घट मद अरू महिष अनेक ||
महिष खाइ करि मदिरा पाना | गर्जा वज्राघात समाना ।। "

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विचारों से राम का समर्थन करने वाला यह योद्धा युद्ध-क्षेत्र में रावण की ओर से लड़ने के लिए बाध्य था। युद्ध के परिणाम के विषय में उसे कोई सन्देह नहीं था, वस्तुत: वह विजय का संकल्प लेकर युद्ध के लिए चलता भी नहीं है। वह तो रावण के द्वारा किए गए सद् व्यव्हार का प्रतिदान देने के लिए युद्ध-क्षेत्र में जा रहा था। इसीलिए वह किसी वाहन या सेना को साथ में ले-जाना स्वीकार नहीं करता है –

"कुम्भकरन दुर्मद रन रंगा।
चला दुर्ग तजि सेन न संगा।।"

कुम्भकर्ण के विशाल शरीर को देखते ही वानरों की सेना आश्चर्यचकित हो जाती है। विभीषण आगे बढ़कर कुम्भकर्ण के चरणों में जाकर नमन करते हैं। जिन परिस्थितियों से बाध्य होकर उन्हें लंका का परित्याग करना पड़ा था, उन्हें भी वह अपने बड़े भाई के समक्ष रखते हैं।

उन क्षणों में भी कुम्भकर्ण की न्यायबुद्धि पूरी तरह लुप्त नहीं हुई थी। वह विभीषण के कार्यों का न केवल अनुमोदन करता है, अपितु भावुकता भरे स्वर में उन्हें "वंशविभूषण" की उपाधि देकर उनका अभिनन्दन भी करता है। कपट छोड़कर मन, वचन, कर्म से श्रीराम की भक्ति करने का उपदेश देता है। कुम्भकर्ण का यह रूप उसकी आकृत्ति, उसके आचरण, उसके आहार-विहार से सर्वथा भिन्न प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि इस भयानक दिखाई देने वाले व्यक्ति के हृदय में एक अत्यन्त संवेदनशील मन विद्यमान था ।

विभीषण के मार्ग का अनुगमन कर पाना उसके लिए सम्भव नहीं था। इसलिए वो विभीषण से तत्काल लौट जाने का भी अनुरोध करता है क्यूंकि उसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसकी दृष्टि धुँधली हो रही है और वह मृत्यु के सन्निकट पहुंच रहा है –

" देखि विभीषनु आगें आयउ। परेउ चरन निज नाम सुनायउ।।
अनुज उठाइ हृदयँ तेहि लायो। रघुपति भक्त जानि मन भायो।।
तात लात रावन मोहि मारा। कहत परम हित मंत्र विचारा।।
तेहिं गलानि रघुपति पहिं आयउ। देखि दीन प्रभु के मन भायउँ।।
सुनु सुत भयउ काल बस रावन | सो कि मान अब परम सिखावन !।
धन्य धन्य तै धन्य विभीषन। भयउ तात निसिचर कुल भूषन।।
बंधु बंस तै कीन्ह उजागर। भजेहु राम सोभा सुख सागर।।
वचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर।
जाहु न निज पर सूझ मोहि भयऊँ काल बस बीर।।"

इसके पश्चात कुम्भकर्ण का दुर्दमनीय शौर्य प्रकट होता है। रावण और मेघनाद की तरह भले ही उसने कई दिनों तक युद्ध न किया हो, पर केवल एक दिन के लिए लड़ा जाने वाला उसका युद्ध अप्रतिम था। अकेला कुम्भकर्ण कपि-सेना के सभी महान् योद्धाओं को परास्त करने में सफल हो जाता है। अतुलित बली आंजनेय भी इसके अपवाद नहीं सिद्ध होते हैं। यद्यपि उन्होंने अपने सबल प्रहार से कुम्भकर्ण को मूर्छित करने में सफलता प्राप्त की, पर बाद में उसके प्रहार से पवननन्दन भी मूर्छित हो गए। इससे वानरों की सेना में अभूतपूर्व आतंक फैल गया। वनराधीश सुग्रीव को तो वे मूर्छित देखकर बगल में दबाकर लंका की ओर लौटता दिखाई देता है, यह उसकी दृष्टि में बालि द्वारा रावण के प्रति किए जाने वाले व्यवहार का बदला था।

वेदोपरान्त ब्राह्मण- ग्रन्थों में 'शतपथ ब्राह्मण' वीररस--वर्ण्य के लिए प्रथम स्मरणीय है। इसमें अनेक ऋषियों ने शासकों की युद्धवीरता और दानवीरता की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। इस ब्राह्मण के अश्वमेघ यज्ञ-प्रसंग में ऐसा वर्णन आया है कि ब्राह्मण तो दिन में स्तवन करता है, किन्तु राजन्य रात में। ब्राह्मण यज्ञकर्ता के दानादि की प्रशंसा करता है, किन्तु राजन्य उसकी वीरता का वर्णन करते हुए उसकी विजय का वर्णन करता है। डॉ0 उदय नारायण तिवारी, डॉ0 हरदेव बाहरी एवं विन्टरनित्ज के अनुसार, वीरता-सम्बन्धी यह स्तवन ही भारतीय वीरकाव्य का आदि रूप है। भारतीय पुराणों में सूर्य और चन्द्र वंश के राजाओं के अनेक आख्यान भरे पड़े हैं, जिनमें राजाओं की युद्धवीरता, दानवीरता, दयावीरता और धर्मवीरता की कथाएँ वर्णित हैं, किन्तु पुराणों के पूर्वापर सम्बन्ध-निर्वाह और अन्विति की कमी के कारण पुराणों में वर्णित वीर-रसपूर्ण आख्यानों का क्रमिक विकास निरूपित करना अत्यन्त कठिन कार्य है। लौकिक संस्कृत के आदिकाव्य वाल्मीकि - रामायण" का आरम्भ और अन्त यद्यपि करुण रस से होता है - आरम्भ क्रोंच -वध से और अन्त सीता' के धरती-प्रवेश से, किन्तु इस महाकाव्य का राम-रावण-युद्ध वीररसात्मक काव्य के नाते अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यों वीररस के लिए जिन ओजपूर्ण उक्तियों की आवश्यकता होती है, उनका यहाँ अभाव-सा है। महान् विश्वकोषात्मक ग्रंथ 'महाभारत' वीररस-प्रधान महाकाव्य है। इसमें भरतवंश में उत्पन्न कौरवों और पाण्डवों की घोर युद्ध-कथा वर्णित है।

वीर-चरित्रों, युद्धों, दान, दया और धर्म-वीरों के अत्यन्त ओजस्वी वर्णनों का तो 'महाभारत' भाण्डार ही है। भारत के आर्य जाति के इतिहास में 'महाभारत' का वही स्थान है, जो लैटिन में वर्जिल के इनीड का।'महामारत' के वीर-रसपूर्ण प्रसंग परवर्ती भारतीय वीर-काव्यों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं।

सहायक ग्रंथ-सूची:-

1. बलदेव प्रसाद मिश्र - तुलसीदर्शन
2. चंद्रवली पांडेय - तुलसीदास
3. रामचन्द्र शुक्ल - गोस्वामी तुलसीदास
4. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त - तुलसीदास
5. डॉ० नंदकिशोर तिवारी - तुलसी-साहित्य में माया
6. डॉ० अंबाप्रसाद सुमन - रामचरितमानस का वाग्वैभव

7. डॉ० रामलाल सिंह - तुलसी-काव्य-दर्शन
8. राम प्रतिपाल मिश्र - तुलसी-काव्य-चिन्तन
9. डॉ० मदन गोपाल मिश्र - तुलसीदास
10. डॉ० लल्लन राय - तुलसी की साहित्य-साधना
11. डॉ० छोटेलाल आर - बेलसी साहित्य की भूमिक
12. डॉ० भाग्यवती सिंह - तुलसी का सौन्दर्य-बोध
13. उदयभाजु सिंह - लुलसी-काव्य
14. पं० रामचन्द्र द्विवेदी - तुलसीदास की भाषा
15. पं० राजपति दीक्षित - तुलसीदास और उनका युग
16. प्रो० विनय कुमार - लुलसीदास का प्रगीत काव्य
17. डॉ० रामदत्त भारद्वाज - तुलसीदास और उनके काव्य
18. डॉ० बलदेव प्रसाद मिश्र - मानस में राम-कथा
19. डॉ० श्रीकृष्ण लाल - मानस-दर्शन
20. जयराम दास दीन – मानस स्हस्य
21. अंजनी नंदन शरण - मानस-पीयूष
22. परशुराम चवुर्वेदी - मानस की रामकथा

RRIJM 2015, All Rights Reserved